सेवा में,
माननीय काशी के प्रिय सांसद जी एवं देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी को उचित कार्यवाही हेतु सादर प्रेषित

विषय - त्रिभुवन विख्यात श्रेष्ठ ब्रह्माण्ड की नाभि, भगवान् विश्वेश्वर, भगवान् विष्णु और अन्य देवी देवताओं का प्रधान स्नान-ध्यान स्थल, पवित्र तीर्थ मणिकर्णिका घाट भूमि और पवित्र महाशमशान जलासेन घाट भूमि के धर्म-शास्त्र-मर्यादा-रक्षार्थ "मसाने की होरी" "होली" जैसी नव प्रचलित दूषित प्रथा को प्रतिबन्धित किए जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,
श्रीमान् श्रीविद्वान् आपको सादर अवगत कराना है कि काशी में अवस्थित त्रिभुवन श्रेष्ठ पवित्र मणिकर्णिका तीर्थ और काशी के पवित्र महाश्मशान-जलासेन घाट पर विगत लगभग 8 वर्ष से शास्त्र-धर्म-तीर्थ-मर्यादा का उल्लंघन कर होली के दिन नव युवकों युवतियों द्वारा शराब-बीयर पीकर नशे में धुत होकर भौंडा, विकृत नाच गान किया जा रहा है। जो सनातन सांस्कृतिक-परम्परा के नितान्त विरुद्ध है तथा पवित्र स्थल मणिकर्णिका घाट तीर्थ भूमि और महाश्मशान भूमि के पवित्रता और महनीयता को विकृत करने का कुत्सित प्रयास है।

देवाधिदेव महादेव के शास्त्र प्रमाणित प्रिय स्थल मणिकर्णिका घाट तीर्थ भूमि और महाश्मशान पवित्र भूमि पर इस विकृत कृत्य का न तो लौकिक परम्परा का प्रमाण है और न ही कोई सनातन शास्त्र का प्रमाण है। यह प्रथा विगत कुछ वर्षों से कतिपय नशेड़ियों द्वारा इस विकृत परम्परा का हठधर्मिता पूर्वक प्रचलन किया गया है।

अतः मान्यवर जी से विनम्र निवेदन है कि काशी की पवित्र परम्परा और ब्रह्माण्ड की नाभि,.भगवान् विष्णु भगवान् विश्वेश्वर और अन्य देवी देवताओं का प्रधान स्नान-ध्यान स्थल पवित्र तीर्थ मणिकर्णिका घाट भूमि और भगवान् शिव के प्रिय पवित्र ध्यानस्थल महाश्मशान भूमि की महनीयता की रक्षा के लिए तत्काल मणिकर्णिका तीर्थ घाट और पवित्र महाश्मशान पर प्रचलित उक्त विकृत नृत्य प्रथा को प्रतिबन्धित कराने की कृपा करें।

त्रिभुवन श्रेष्ठ मणिकर्णिका तीर्थ सीमा भूमि और अवमुक्त पवित्र महाश्मशान भूमि स्थान एवं इसकी सीमा की पवित्रता तथा इसका सनातन शास्त्रीय माहात्म्य का प्रमाण संलग्न है।

सादर निवेदककर्ता अविमुक्त महाक्षेत्र आनंदकानन वन काशीढूंढे परिवार सदस्य आपका अजय शर्मा काशी
9454400000, 7071443333
प्रदेश अध्यक्ष केंद्रीय ब्राह्मण महासभा उत्तर प्रदेश

श्रीअविमुक्त-महाक्षेत्र आनंद-काननवन "काशीढूंढे"

====================================

क्या है मणिकर्णिका ,तीर्थ मंदिर या महाश्मशान??
कहा सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र ने अपना पिताधर्म पूर्ण किया..

धर्मनिष्ठ काशीवासी ,विद्वान एवं काशीनाथ के भक्त स्वयं उक्त तीनों तीर्थ स्थानों की महिमा और सीमाक्षेत्र को जाने ताकि आप स्वयं तीर्थ के तीर्थत्व के रक्षार्थ आवाज उठा सकें और सत्य सनातन शिव नगरी के पवित्र स्थानों की महिमा से लोगो अवगत करा सके

चन्द्र टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार, पै दृढ श्री हरिश्चन्द्र का टरै न सत्य विचार॥

इस आनन्दवन में मणिकर्णिका में एक डुबकी से जो पुण्य होता है, जन्मभर समस्त तीर्थों में स्नान करने से भी वह नहीं मिल सकता। यद्यपि काशी में अनेक तीर्थ और बहुतेरे लिंग भरे पड़े हैं, तथापि विश्वेश्वर का सेवन और मणिकर्णिका का स्नान करने ही योग्य है तथा लिंगों में एकमात्र विश्वेश्वर और तीर्थों में मणिकर्णिका ही श्रेष्ठ है, यही बात कहते हुए वेदव्यास उन दोनों को बहुत ही अधिक मानने लगे--

सर्वतीर्थावगाहाच्च यावज्जन्म यदर्ज्यते। तदानन्दवने प्राप्यं मणिकर्ण्यकमज्जनात्॥
काश्यां तीर्थान्यनेकानि काश्यां लिङ्गान्यनेकशः । तथापि सेब्यो विश्वेशः स्नातव्या मणिकर्णिका॥
लिङ्गेष्वेको हि विश्वेशस्तीर्थेषु मणिकर्णिका। इति संव्याहरन् व्यासः तद्वयं बहु मन्यते॥

पृथिवी के नाभिस्थान में रहने से यह तीर्थ नाभितीर्थ कहा गया है, भूमि ही की क्यों, यह समस्त ब्रह्माण्डगोलक की शुभोदया नाभि है। यही गंभीरता की भूमि मणिकर्णिका नाभि है, जिसमें समस्त ब्रह्माण्डगोलक उदय और अस्त होता रहता है-

नाभितीर्थमिदं प्रोक्तं नाभिभूतं यतः क्षितेः। अपि ब्रह्माण्डगोलस्य नाभिरेषा शुभोदया॥
सा माणिकर्णिकेयीयं नाभिर्गाम्भीर्यभूमिका । ब्रह्माण्डगोलकं सर्वं यस्यामेति लयोदयम्॥

काशीखण्ड में अग्निबिन्दु ने श्रीहरि से पूछा-- हे माधव ! इस पुण्यभूमि मणिकर्णिका का कितना परिमाण है? श्रीविष्णु जी ने कहा- (दक्षिण) गंगाकेशव से (उत्तर) हरिश्चन्द्र का मंडप और (पूर्व) आधी गंगा से (पश्चिम) स्वर्गद्वार तक मणिकर्णिका की सीमा है-

विष्णो कियत्परीमाणा पुण्यैषा मणिकर्णिका।
आगङ्गा केशवादा च हरिश्चन्द्रस्य मण्डपात्। आमध्याद्देवसरितः स्वद्वारान्मणिकर्णिका॥

मणिकर्णिका की सीमा के बाहर महाश्मशान भूमि की पहचान हेतु अनेक प्रमाण हैं परन्तु यहां पद्मपुराण काशीरहस्य श्लोक कहता है। हे मणिकर्णिके! आप के तट पर भगवान विष्णु और शिव सायुज्य मुक्ति प्रदान करते हैं,(एक बार) जीव के महाप्रयाण के समय "वे दोनों (उस जीव को अपने-अपने लोक ले जाने के लिए) आपस में स्पर्धा करते है।हे माते! आपके तट पर होने वाली मंगलकारी मृत्यु की तो देवता भी सराहना करते हैं, देवराज इन्द्र अपने हजार नेत्रों से

उस मनुष्य का दर्शन करने के लिए सदा लालायित रहते हैं. सूर्यदेव भी उस जीव को आता हुआ देखकर अपनी हजार किरणों से उसके सम्मान के लिए सदा उसकी ओर बढ़ते हैं, (देख देवता सोचते हैं कि) वृषभ पर सवार होकर अथवा गरुड़ पर आसीन होकर यह पुण्यात्मा जीव (कैलाश अथवा वैकुण्ठ) न जाने किस लोक में जाएगा? (लेकिन) चन्द्रमौलि भगवान शिव अपने योगाभ्यास के बल से उस पुण्य को जानते हैं तथा (हे माते) वे ही आपके तट पर मृत्यु को प्राप्त पुरुष को साक्षात नारायण अथवा शिव बना देते हैं--

त्वत्तीरे मणिकर्णिके हरिहरौ सायुज्यमुक्तिप्रदौ । वादं तौ कुरुतः परस्परमुभौ जन्तौः प्रयाणोत्सवे॥
त्वत्तीरे मरणं तु मंगलकरं देवैरपि श्लाघ्यते। शक्रस्तं मनुजं सहस्त्रनयनैर्द्रष्टुं सदा तत्पर:॥
आयान्तं सविता सहस्त्रकिरणै: प्रत्युद्गतोSभूत्सदा। पुण्योSसौ वृषगोSथवा गरुडग: किं मन्दिरं यास्यति॥
चन्द्रशिखरस्तत्पुण्यपारं गत-स्त्वत्तीरे। प्रकरोति सुप्तपुरुषं नारायणं वा शिवम्॥

काशी के जिस अविमुक्त महाक्षेत्र के महाश्मशान में राजा हरिश्चंद्र जी ने पिताधर्म को पूर्ण करने के लिए अपने आपको बेच था, वही स्थान उन महापुरुष की कर्मभूमि थी । वह पवित्र स्थान मणिकर्णिका तट पर अवस्थित इस अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र आनन्द वन के महाश्मशान में गौरी मुख त्रिकण्टक विराजते--

अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने महा- श्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टक विराजिते।

वर्तमान समय में राजा हरिश्चन्द्र जी की कर्मभूमि और तपभूमि स्थान को लेकर भ्रामक प्रचार प्रसार सोशल मीडिया या अन्य मीडिया या समाचार पत्रों में किया जा रहा है। जो सनातन समाज हित में नहीं है,इसलिए उक्त सच को भी सामने लाना भी आवश्यक देवकार्य ही है- **धर्मो रक्षति रक्षितः**

काशीखण्ड में मणिकर्णिका सीमा कहने के पश्चात भगवान श्रीविष्णु जी कहते है, हे मुने! मणिकर्णिका कुण्ड के उत्तर राजा हरिश्चन्द्र द्वारा स्थापित हरिशचंद्रेश्वर लिंग एवं हरिश्चन्द्र विनायक और वही सीमा विनायक विद्यमान है, वहां से मणिकर्णिका तीर्थ पहुंच कर गंगा में जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक हरिश्चन्द्र महातीर्थ में स्नान कर, हरिश्चन्द्रेश्वर को प्रणाम करे, वह कभी सत्य से भ्रष्ट नहीं होता--

हरिश्चन्द्रे महातीर्थे स्नात्वा श्रद्धान्वितो नरः॥ हरिश्चन्द्रेश्वरं नत्वा न सत्यात्परिहीयते ॥

इस अविमुक्तक्षेत्र की सीमा-- पूर्व में मणिकर्णिकेश्वर, दक्षिण में ब्रह्मेश्वर, पश्चिम में - गोकर्णेश्वर और उत्तर में-भारभूतेश्वर इतनां स्थान अविमुक्तक्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ और महाफलदायक है—

पूर्वतो मणिकर्णीशो ब्रह्मेशो दक्षिणे स्थितः ।
पश्चिमे चैव गोकर्णो भारभूतस्तथोत्तरे ॥ इत्येतदुत्तमं क्षेत्रमविमुक्ते महाफलम्॥

नोट-काशी में माँ गंगा के आने से पूर्व मृतक की अस्थि (हड्डी) डालने का तडाग। गोकर्णेश्वर से हाटकेश्वर पहुँच अस्थिक्षेप तडाग (हड़हा-बेनिया) पर कीकसेश्वर का दर्शन करे- **अस्थिक्षेपतडागे च दृष्ट्वा वै कीकसेश्वरम् ॥**

काशीखंड में वर्णित श्लोकों से यह स्पष्ट हो जाता है कि मणिकर्णिका तीर्थ मंदिर है और भगवान शिव को प्रिय पवित्र महाश्मशान भूमि जलासेन घाट है और काशी सोनारपुरा क्षेत्र में अवस्थित के हरिश्चंद्र शमशान घाट से राजा हरिश्चंद्र जी

का दूर दूर तक कोई संबंध नहीं है । मणिकर्णिका तीर्थ साथ हरिश्चंद्र घाट का जो भ्रामक प्रचार प्रसार लोग कर वास्तव में काशी के केदारतीर्थ महिमा एवं हरिद्वार तीर्थक्षेत्र के महत्व को नष्ट भ्रष्ट कर रहें हैं। जो वर्तमान और भविष्य में सनातन समाज के लिए हितकर नही है। इसलिए तीर्थ के तीर्थत्व की पवित्रता के रक्षार्थ भ्रामक प्रचार प्रसार और मसाने होली बंद बंद करवाने हेतु उचित प्रयास करने की कृपा करे।

अविमुक्त "काशी" ही परम ज्ञान है। अविमुक्त काशी ही परम पद है। अविमुक्त काशी ही परम तत्व है और अविमुक्त काशी ही परम शिव है--

अविमुक्तं परं ज्ञानं अविमुक्त परं पदम् । अविमुक्त परतत्वं अविमुक्तं परं शिवम् ॥

हे देवि ! पूर्व जन्म से जो पाप संचित रहता है, वह इस अविमुक्त क्षेत्र काशी में प्रवेश करने मात्र से ही नष्ट हो जाता है और तीर्थसेवी भक्त जन अविमुक्त क्षेत्र काशी शिवपुरी को प्राप्त करके भगवान अविमुक्तेश्वर के दर्शन से ही ब्रह्महत्या के पापों से छूट जाते हैं--

जन्मान्तरसहस्त्रेषु यात्पापं पूर्वसञ्चितम् । अविमुक्ते प्रविष्टस्य तत्सर्वं व्रजतिक्षयम् ॥
अविमुक्तं समासाध्य तीर्थसेवी कुरूद्वह । दर्शनद्देव देवस्य मुच्यते ब्रह्महत्यया ॥

इस अवमुक्त क्षेत्र-काशी में साक्षात् शंकर जी जीव को मरण समय में तारक ब्रह्म मन्त्र का उपदेश देते हैं। इस प्रकार की मोक्षदायिनी यह काशीपुरी अविमुक्त नाम से प्रसिद्ध है--

यत्र साक्षान्महादेवो देहान्तेऽक्षयमीश्वरः। व्याचष्टे तारकं ब्रह्म, तथैव ह्यविमुक्तकम्॥

काशी के बिना सारे साधन मोक्ष मार्ग में विघ्न ही सिद्ध होते हैं, क्योंकि काशी निर्विघ्न की जननी और मोक्ष की उत्तम खान है और काशी धन्यतमा एवं पुण्यरूपा उत्तम नगरी है,जो गंगा जी से शोभायमान हैं । यहाँ यह मणिकर्णिका उत्तम सुख देने वाली है, क्योंकि मुक्ति उसकी दासी है--

सर्वं सविघ्नं मोक्षस्य साधनङ्काशिकां विना। काशी निर्विघ्नजननी काशी मोक्षस्य सत्खनिः ॥
काशी धन्यतमाविमुक्तनगरी समलङ्कृता गंङ्गया । अत्रेयं मणिकर्णिका सुखकरी मुक्तिर्हि तत्किङ्करी ॥

मणिकार्णिका सीमा के तट पर विद्यमान जलासेनी घाट महाश्मशान भूमि है, इस अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र,आनन्द वन, महाश्मशान में गौरी मुख त्रिकण्टक विराजते--

अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने महा- श्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टक विराजिते।

हे मणिकर्णिके! आप के तट पर भगवान विष्णु और शिव सायुज्य मुक्ति प्रदान करते हैं. (एक बार) जीव के महाप्रयाण के समय वे दोनों (उस जीव को अपने-अपने लोक ले जाने के लिए) आपस में स्पर्धा कर रहे थे. भगवान विष्णु, शिवजी से बोले कि यह मनुष्य अब मेरा स्वरुप हो चुका है. उनके ऎसा कहते ही वह जीव उसी क्षण भृगु के पद-चिन्हों से सुशोभित वक्ष:स्थलववाला तथा पीताम्बरधारी होकर गरुड़ पर सवार हो उन दोनों के बीच से निकल गया--

त्वत्तीरे मणिकर्णिके हरिहरौ सायुज्यमुक्तिप्रदौ वादं तौ कुरुत: परस्परमुभौ जन्तौ: प्रयाणोत्सवे।
मद्रूपो मनुजोऽयमस्तु हरिणा प्रोक्त: शवस्तत्क्षणात् तन्मध्याद् भृगुलाण्छनो गरुडग: पीताम्बरो निर्गत:॥

यहां काशी में मनुष्य के मरण समय में भगवान शिव उस प्राणी को अपनी गोद में रखकर तारक मंत्र का उपदेश करते हैं और माता विशालाक्षी गौरी (पार्वती) कस्तूरी की गंध से सुगंधित अपने आँचल की वायु से उसकी मरण समय कि व्याकुलता दूर करती है--

अनिलो मृगनाभिरेणुगन्धिः राधिकाशि प्रणवोपदेशकाले।
हरते मरणश्रमं नराणां हर वामाध्द्वर्कुचोत्रीय जन्माः ॥

काशी में रहकर जो व्यक्ति सत् शास्त्रों का चिन्तन, सत्पुरुषों की सङ्गति, भग्वन्निष्ठ सद्बुद्धि, निरन्तर सत्यभाषण और सदाचारों का अनुपालन इन पाँच सकारों का सेवन करता हैं,उसे पञ्चभौतिक देह छोड़ते हुए मरण- काल में कोई कष्ट नहीं होता और यह स्थान भगवान् विष्णु की विश्राम-भूमि और शिव की भी विश्राम-भूमि है--

सच्छास्त्रं सज्जनासङ्गः सद्बुद्धिः सद्वचोऽसकृत्।
सदाचारः पञ्च युञ्जन् पञ्चत्वे नावसीदति ॥
विष्णुविश्रामभूमिश्च शिवविश्रामभूमिका ॥

श्मशान शब्द का निर्वचन करते हुए शब्द और अर्थ के विद्वानों द्वारा श्म शब्द का अर्थ शव और शान का अर्थ शयन कहा गया है और जो प्रलय काल के उपस्थित हैं ने पर भूत अर्थात् जीव महत् तत्त्व को प्राप्त करते हैं। शव रूप में जीव के शयन करने के कारण यह श्मशान है--

श्म' शब्देन शवः प्रोक्तः शानं शयनमुच्यते । निर्वचन्ति श्मशानार्थमिति शब्दार्थकोविदः ॥
महान्त्यपि च भूतानि प्रलये समुपस्थिते। शेरतेऽत्र शवा भूत्वा श्मशानं तु ततो महत्॥

माता पार्वती पूछती है,आपको यह शमशान क्यों इतना प्रिय है?? तब देवाधिदेव महादेव कहते- हे पार्वती! मैं सदा पवित्र स्थान ढूंढने के लिए सारी पृथ्वी पर दिन- रात विचरण करता रहता हूं। लेकिन मुझे श्मशान से बढ़कर कोई दूसरा पवित्र स्थान नहीं दिखता है। इसलिए श्मशान में मेरे मन को शांति मिलती है और मसान में आने जाने वालो के मुख से राम नाम सत्य है सुनकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता होती है और जीव के शव जल जाने के उपरांत राख में भी मुझे राम ही दिखते है। उसी राम नाम के बल से में जीव को जीवन मरण के चक्र से मुक्त कर देता हूं और काशी के महाश्मशान में तो मैं..........

हे सुव्रत ! सायुज्य मुक्ति तो मात्र काशी में ही प्राप्त होती है । अन्यत्र तो सान्निध्यादि मुक्ति प्राप्त होती है । जो सायुज्य मुक्ति अन्यत्र परम दुर्लभ है, वह भी काशी में अनायास ही प्राप्त हो जाती है--

सायुज्य   मुक्तिरत्रैव   सान्निध्यादिरथान्यतः । सुलभा सोऽपि नो नूनं काश्यां मोक्षोऽस्ति हेलया ॥

काशी के श्मशान में अन्य श्मशानों की अपेक्षा पंचमहाभूत, तीनों सूक्ष्म शरीर प्रलय में निर्मूल होकर पंचतत्व में विलीन हो जाते हैं। इसलिए इसे महाश्मशान कहा गया। यह महाश्मशान केवल शरीरी को नहीं वरन् अशरीरी से भी मुक्ति देता है-- **काश्यां मरणान् मुक्तिः॥**

काशी के पग पग तीर्थ धर्ममर्यादा के पालन में भगवान श्रीहरि विष्णु जी नित्य स्वर्ग से आकर गरुण जी को काशी की सीमा पर छोड़ पैदल मणिकार्णिका स्नान को जाते हैं। जिस काशी के महाशमशान में शांति प्राप्त करने हेतु भगवान शिव मनुष्यों को राम नाम के बल से सायुज्य मुक्ति प्रदान करते हैं। उसी पवित्र मसान भूमि पर विगत 6 वर्षो डीजे पर "होली खेले मसाने में" बजाकर शराब बीयर के नशे में हुरदंग कर रहें हैं और मृतकों के शव को मनोरंजन का साधन बनाया जा रहा है,जिसे देख काशी के विद्वानों का मौन होना उचित नहीं है अतः आपसे निवेदन है कि सनातन समाज हित में उचित निर्णय लेने की कृपा करे

काशी में देवस्थानों, देवतीर्थों की धर्ममर्यादा का उल्लंघन करने वालों को स्मरण करना होगा कि जैसे कोई व्यक्ति अपने पैर से अपने सिर की छाया का उल्लंघन नहीं कर सकता वैसे ही इन सर्वोत्कृष्टा पराशक्ति का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता--

स्वपदा स्वशिरच्छायां यदुल्लङ्घितुमीहते। पादोद्देशेशिरो नस्यात्तथेयं वैन्दवी कलां॥

महर्षि वेदव्यास जी ने कहा है-- जो काशी धर्म की जननी है। जो काशी मोक्ष प्रदान करने वाली है। जो काशी पापों का क्षय करने वाली है ऐसी काशी से द्रोह करने वाला अर्थात् उसकी मर्यादाओं का हनन करने वाला निश्चय ही अधम होगा।

या काशी धर्मजननी या काशी मोक्षदायिनी। पापक्षयकरी या च तां काशीं दुह्यतेऽधमः ॥

मुक्ति प्रदायिनी काशी के विषय में यहां तक कहा गया है कि- **कलिर्लक्ष्यं शरोधर्भ शिवो धन्वो पुनातु माम्॥** अर्थात् धर्म ही बाण है, कलियुग ही लक्ष्य है। ऐसे विशिष्ट धनुष को धारण करने वाले शिव की त्रिशूल पर स्थित काशी देहधारियों को तीनों ऋणों से मुक्त करती है।

आपका अजय शर्मा काशी
प्रदेश अध्यक्ष केंद्रीय ब्राह्मण महासभा उत्तर प्रदेश

नई बात

बीएचयू के धर्म विद्या विज्ञान संकाय, केंद्रीय ब्राह्मण महासभा और काशी के विद्वानों का दावा

आदितीर्थ है मणिकर्णिका, हरिश्चंद्र घाट पर नहीं बिके थे राजा हरिश्चंद्र

आलोक कुमार त्रिपाठी

वाराणसी। मणिकर्णिका महाश्मशान नहीं आदितीर्थ है। हरिश्चंद्र घाट का राजा हरिश्चंद्र से कोई सीधा संबंध नहीं है। काशी के अविमुक्त क्षेत्र के अंदर जो महाश्मशान है उसका असली स्थान जलासेन घाट है। लंबे समय से मणिकर्णिका और हरिश्चंद्र घाट पर जो भी मिथक हैं, उसे बीएचयू और काशी के विद्वानों की आनंदकानन वन काशी ढूंढे टीम ने सिरे से खारिज कर दिया है।

बीएचयू के धर्म विद्या विज्ञान संकाय, केंद्रीय ब्राह्मण महासभा और काशी के विद्वानों ने काशी खंड और 18 पुराणों के अध्ययन के बाद मणिकर्णिका और हरिश्चंद्र घाट के इस सच को सामने रखा है। 15 दिनों के अध्ययन और खोज के बाद विशेषज्ञों और विद्वानों ने बताया कि मणिकर्णिका श्मशान नहीं काशी का आदितीर्थ है। इसे महाश्मशान या श्मशान कहना उचित नहीं है। काशी के अविमुक्त क्षेत्र के अंदर जो

महाश्मशान है उसका स्थान जलासेन घाट है। वहीं पर जलासेनी शिवलिंग भी गंगा के अंदर विराजमान है जो शिव के साधकों को ही नजर आता है।

जलासेन घाट पर ही खुद को बेचा था राजा हरिश्चंद्र ने: काशी के जिस अविमुक्त महाक्षेत्र के महाश्मशान में राजा हरिश्चंद्र ने अपने सत्य के धर्म को पूर्ण करने के लिए अपने आपको बेचा था। वह पवित्र स्थान मणिकर्णिका तट पर ही है। काशी खंड के श्लोक के अनुसार वह स्थान मां विशालाक्षी देवी के सामने जलासेन घाट ही था।

ये रहे टीम में शामिल

बीएचयू के संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के प्रो. माधव जनार्दन रटाटे, काशी करवत मंदिर के महेश उपाध्याय, मंगला गौरी के महंत नरेंद्र पांडेय, धर्मशास्त्री अवधराम पांडेय, वेदमूर्ति शास्त्री, मनीष पांडेय, डॉ. संजय मिश्र, प्रो. उपेंद्र देव पांडेय, सुधांशु पांडेय, मार्कंडेय तिवारी, केंद्रीय ब्राह्मण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष अजय शर्मा की टीम ने अध्ययन किया है।

दोपहर में स्नान का है महत्व

मान्यता के अनुसार माता पार्वती जी का कर्ण फूल यहीं गिरा था जिससे इसका नाम मणिकर्णिका पड़ गया। यहीं से पंचक्रोशी यात्रा का संकल्प लेकर श्रद्धालु पंचक्रोशी परिक्रमा करते हैं। मणिकर्णिका घाट पर दोपहर में स्नान का महत्व है।

पृथ्वी के नाभिस्थान में है मणिकर्णिका तीर्थ

काशीखंड में अग्निबिंदु ने श्रीहरि से पूछा है कि हे माधव पुण्यभूमि मणिकर्णिका कहां तक है तो भगवान विष्णु ने बताया कि दक्षिण गंगाकेशव से उत्तर हरिश्चंद्र मंडप, पूर्व आधी गंगा से पश्चिम स्वर्गद्वार तक मणिकर्णिका की सीमा है। पुराणों के अनुसार मणिकर्णिका पृथ्वी के नाभिस्थान में है और इसे नाभितीर्थ कहा जाता है।

राजा हरिश्चंद्र से नहीं है हरिश्चंद्र घाट का कोई संबंध

केंद्रीय ब्राह्मण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष अजय शर्मा ने बताया कि काशीखंड में वर्णित श्लोकों से यह स्पष्ट है कि सोनारपुरा में गंगा के तट पर स्थित हरिश्चंद्र श्मशान घाट से राजा हरिश्चंद्र का दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं है। हरिश्चंद्रघाट का भ्रामक प्रचार प्रसार कर लोग काशी के केदारखंड एवं हरिद्वार क्षेत्र के महत्व को नष्ट कर रहे हैं।

विस्तार

वॉट्सऐप चैनल फॉलो करें

वाराणसी के मणिकर्णिका घाट पर होने वाली चिता भस्म की होली पर काशी के विद्वान, तीर्थ पुरोहित और संत समाज में आक्रोश है। उन्होंने जनता से अपील की है कि वह इस आयोजन को काशी की परंपरा ना बनाएं। काशी विद्वत कर्मकांड परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य अशोक द्विवेदी ने कहा कि मसान में होली खेलने की कहीं भी परंपरा नहीं रही है।

amazon pay

सार

काशी विद्वत कर्मकांड परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य अशोक द्विवेदी ने कहा कि मसान में होली खेलने की कहीं भी परंपरा नहीं रही है। काशी विद्वत परिषद के महामंत्री प्रो. रामनारायण द्विवेदी ने कहा कि शास्त्र में ऐसी कोई परंपरा नहीं है।

वाराणसी फटाफट: पढ़ें सभी खबरें 60s में >

चिता भस्म की होली। (फाइल) - फोटो : अमर उजाला

Masane ki Holi: चिता भस्म की होली से काशी के विद्वान और संत नाराज, बोले- ऐसी कोई परंपरा नहीं

न्यूज डेस्क, अमर उजाला, वाराणसी Published by: उत्पल कांत

Updated Thu, 02 Mar 2023 10:30 PM IST

विज्ञापन

काशी विद्वत परिषद के महामंत्री प्रो. रामनारायण द्विवेदी ने कहा कि शास्त्र में ऐसी कोई परंपरा नहीं है। जिला प्रशासन को इस पर ध्यान देना चाहिए। भारतीय संत समिति के महामंत्री स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती ने कहा कि मौज के लिए मोक्ष के तीर्थ पर इस तरह का आयोजन निंदनीय है।

काशी की गरिमा से छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए

अखिल भारतीय काशी विद्वत परिषद के डॉ. कामेश्वर उपाध्याय ने बताया कि शास्त्रों के अनुसार, महाश्मशान में होली खेलकर काशी की गरिमा से छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए। श्री काशी महाश्मशान नाथ सेवा समिति के अध्यक्ष चैनु प्रसाद गुप्ता ने बताया कि मणिकर्णिका महाश्मशान पर चिता भस्म की होली की प्राचीनता का उनको पता नहीं है।

विज्ञापन

Kameshwar Upadhyaya
33m ·

मोक्षद्वार मणिकर्णिका को
होलिका हुडदंग घाट होने
से बचायें

** काशी में विश्वनाथ धाम के बाद सर्वोत्कृष्ट स्थान मणिकर्णिका तीर्थ को प्राप्त है।

** पहले यह जल तीर्थ रूप में चक्र पुष्करिणी थी जो बाद में मणिकर्णिका नाम से ख्यात हुई .....चक्रपुष्करिणी चैव ख्याताऽभून्मणिकार्णिका। स्कन्द. काशीखंड ६१/८५

** द्रव्य रूप का परित्याग कर यह द्वादश वर्षीय स्त्री के रूप में देवी हुईं.... द्रवरूप परित्यज ललनारूपधारिणी।

** मणिकर्णिका घाट पर जा कर छः मास में उनके जप और ध्यान करके व्यक्ति इनका दर्शन प्राप्त कर लेता है...
प्रत्यक्ष रूपिणी देवी दृश्यते मणिकर्णिका।

** मणिकर्णिका देवी चार भुजाओं वाली, तीन विशाल नेत्र वाली,दो हाथों को जोड़ी हुई,पश्चिम मुख स्थित रहती हैं। नीलकमल की माला धारण करती हैं।हमेशा बारह वर्षीय शरीर स्वरूप से दर्शन देती हैं। बिजौरा फल एक हाथ में हमेशा लिए रहती हैं ....
प्रत्यक्ष रूपिणी देवी दृश्यते मणिकर्णिका।
चतुर्भुजा विशालाक्षी स्फुरद् भाल विलोचना।।
पश्चिमाभिमुखी नित्यं प्रबद्ध कर सम्पुटा ।
कुमारी रूपिणी नित्यं नित्यं द्वादश वार्षिकी।।

** मणिकर्णिका पर सिद्धि प्राप्ति के लिए सभी तपस्या करते हैं। यह तंत्र साधना का बहुत बड़ा केन्द्र है।इनका मंत्र है... ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ मं मणिकार्णिके नम: ॐ
इस मंत्र का जप करके वहीं गंगास्नान करने से मोक्ष लक्ष्मी की प्राप्ति

काशी के विद्वतजनों ने भरी हुंकार, बंद हो मसाने की होली

कृष्णा पंडित की कलम से

श्रीअविमुक्त-महाक्षेत्र
आनंद-काननवन "काशीक्षेत्रे"

अविमुक्त एकाशीर ही परम ज्ञान है। अविमुक्त काशी ही परम पद है। अविमुक्त काशी ही परम तत्व है और अविमुक्त काशी ही परम शिव है-

हे देवि! पूर्व जन्म से जो पाप संचित रहता है, वह इस अविमुक्त क्षेत्र काशी में प्रवेश करने मात्र से ही नष्ट हो जाता है और तीर्थसेवी भक्त जन अविमुक्त क्षेत्र काशी शिवपुरी को प्राप्त करके भगवान अविमुक्तेश्वर के दर्शन से ही ब्रह्महत्या के पापों से छूट जाते हैं-

इस अवमुक्त क्षेत्र-काशी में साक्षात शंकर जी जीव को मरण समय में तारक ब्रह्म मन्त्र का उपदेश देते हैं। इस प्रकार की मोक्षदायिनी यह काशीपुरी अविमुक्त नाम से प्रसिद्ध है।

काशी के बिना सारे साधन मोक्ष मार्ग में विघ्न ही सिद्ध होते हैं, क्योंकि काशी निर्विघ्न की जननी और मोक्ष की उत्तम खान है और काशी धन्यतमा एवं पुण्यरूपा उत्तम नगरी है,जो गंगा जी से शोभायमान हैं । यहाँ यह मणिकर्णिका उत्तम सुख देने वाली है, क्योंकि मुक्ति उसकी दासी है

मणिकार्णिका सीमा के तट पर विद्यमान जलासेनी घाट महास्मशान भूमि है, इस अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र,आनन्द वन, महास्मशान में गौरी मुख त्रिकण्टक विराजते है

हे मणिकर्णिके! आप के तट पर भगवान विष्णु और शिव सायुज्य मुक्ति प्रदान करते हैं. (एक बार) जीव के महाप्रयाण के समय वे दोनों (उस जीव को अपने-अपने लोक ले जाने के लिए) आपस में स्पर्धा कर रहे थे. भगवान विष्णु, शिवजी से बोले कि यह मनुष्य अब मेरा स्वरूप हो चुका है. उनके ऐसा कहते ही वह जीव उसी क्षण भृगु के पद-चिन्हों से सुशोभित वक्षःस्थलवाला तथा पीताम्बरधारी होकर गरुड़ पर सवार हो उन दोनों के बीच से निकल गया--

यहां काशी में मनुष्य के मरण समय में भगवान शिव उस प्राणी को अपनी गोद में रखकर तारक मंत्र का उपदेश करते हैं और माता विशालाक्षी गौरी (पार्वती) कस्तूरी की गंध से सुगंधित अपने आँचल की वायु से उसकी मरण समय कि व्याकुलता दूर करती है

काशी में रहकर जो व्यक्ति सर शास्त्रों का चिन्तन, सत्पुरुषों की सङ्गति, भग्वन्निष्ठ सद्बुद्धि, निरन्तर सत्यभाषण और सदाचारों का अनुपालन इन पाँच सकारों का सेवन करता है,उसे पञ्चभौतिक देह छोड़ते हुए मरण- काल में कोई कष्ट नहीं होता और यह स्थान भगवान विष्णु की विश्राम-भूमि और शिव की भी विश्राम-भूमि है-

श्मशान शब्द का निर्वचन करते हुए शब्द और अर्थ के विद्वानों द्वारा श्म शब्द का अर्थ शव और शान का अर्थ शयन कहा गया है और जो प्रलय काल के उपस्थित हैं ने पर भूत अर्थात जीव महर तत्त्व को प्राप्त करते हैं। शव रूप में जीव के शयन करने के कारण यह श्मशान है

माता पार्वती पूछती है,आपको यह शमसान क्यों इतना प्रिय है?? तब देवाधिदेव महादेव कहते- हे पार्वती! मैं सदा पवित्र स्थान ढूंढने के लिए सारी पृथ्वी पर दिन- रात विचरण करता रहता हूं। लेकिन मुझे श्मशान से बढ़कर कोई दूसरा पवित्र स्थान नहीं दिखता है। इसलिए श्मशान में मेरे मन को शांति मिलती है और मसान में आने जाने वालो के मुख से राम नाम सत्य है सुनकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता होती है और जीव के शव जल जाने के उपरांत राख में भी मुझे राम ही दिखते है। उसी राम नाम के बल से में जीव को जीवन मरण के चक्र से मुक्त कर देता हूं और काशी के महाश्मशान में तो मैं हे सुव्रत ! सायुज्य मुक्ति तो मात्र काशी में ही प्राप्त होती है । अन्यत्र तो सान्निध्यादि मुक्ति प्राप्त होती है । जो सायुज्य मुक्ति अन्यत्र परम दुर्लभ है, वह भी काशी में अनायास ही प्राप्त हो जाती है

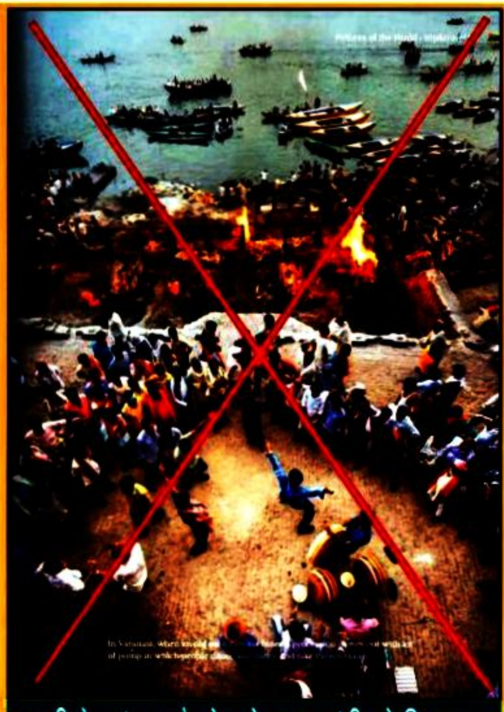

काशी के सांसद और देश के प्रधानमंत्री को लिखा पत्र

काशी के श्मशान में अन्य श्मशानों की अपेक्षा पंचमहाभूत, तीनों सूक्ष्म शरीर प्रलय में निर्मूल होकर पंचतत्व में विलीन हो जाते हैं। इसलिए इसे महाश्मशान कहा गया। यह महाश्मशान केवल शरीरी को नहीं वरन अशरीरी से भी मुक्ति देता है?-- 'काश्यां मरणान मुक्तिः।।

काशी के पग पग तीर्थ धर्ममर्यादा के पालन में भगवान श्रीहरि विष्णु जी नित्य स्वर्ग से आकर गरुण जी को काशी की सीमा पर छोड़ पैदल मणिकार्णिका स्नान को जाते हैं। जिस काशी के महाशमशान में शांति प्राप्त करने हेतु भगवान शिव मनुष्यों को राम नाम के बल से सायुज्य मुक्ति प्रदान करते हैं। उसी पवित्र मसान भूमि पर विगत 6 वर्षों डीजे पर रहोली खेले मसाने मेंर बजाकर शराब बीयर के नशे में हुरदंग कर रहें हैं और मृतकों के शव को मनोरंजन का साधन बनाया जा रहा है, जिसे देख काशी के विद्वानों का मौन होना उचित नहीं है अतः आपसे निवेदन है कि सनातन समाज हित में उचित निर्णय लेने की कृपा करे।

काशी में देवस्थानों, देवतीर्थो की धर्ममर्यादा का उल्लंघन करने वालों को स्मरण करना होगा कि जैसे कोई व्यक्ति अपने पैर से अपने सिर की छाया का उल्लंघन नहीं कर सकता वैसे ही इन सर्वोत्कृष्ट पराशक्ति का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता।

महर्षि वेदव्यास जी ने कहा है- - जो काशी धर्म की जननी है। जो काशी मोक्ष प्रदान करने वाली है। जो काशी पापों का क्षय करने वाली है ऐसी काशी से द्रोह करने वाला अर्थात उसकी मर्यादाओं का हनन करने वाला निश्चय ही अधम होगा।

मुक्ति प्रदायिनी काशी के विषय में यहां तक कहा गया है कि धर्म ही बाण है, कलियुग ही लक्ष्य है। ऐसे विशिष्ट धनुष को धारण करने वाले शिव की त्रिशूल पर स्थित काशी देहधारियों को तीनों ऋणों से मुक्त करती है।

मुक्ति प्रदायिनी काशी के विषय में यहां तक कहा गया है कि-धर्म ही बाण है, कलियुग ही लक्ष्य है। ऐसे विशिष्ट धनुष को धारण करने वाले शिव की त्रिशूल पर स्थित काशी देहधारियों को तीनों ऋणों से मुक्त करती है

काशी विश्वनाथ मंदिर न्यास परिषद् अध्यक्ष प्रो. नागेंद्र पांडेय, काशी विद्वत परिषद् महामंत्री श्री राम नारायण द्विवेदी , काशी विश्वनाथ मंदिर न्यास के पूर्व अध्यक्ष एवं "काशी कर्म काण्ड परिषद् अध्यक्ष आचार्य श्री अशोक द्विवेदी , अखिल भारतीय विद्वत परिषद् अध्यक्ष श्री कामेश्वर उपाध्याय, आदिमहादेव काशी धर्मालय मुक्ति न्यास के संस्थापक श्री रामप्रसाद सिंह , "काशी घाटवाक संस्था प्रमुख डा. श्री विजय नाथ मिश्र ,धर्म शास्त्र विभाग संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रोफेसर श्री माधव जनार्दन रटाटे

अखिल भारतीय संत समिति महामंत्री स्वामी श्री जितेंद्रानंद सरस्वती महाराज!

तीर्थपुरोहित महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री कन्हैया त्रिपाठी एवं अजय शर्मा काशी प्रदेश अध्यक्ष केंद्रीय ब्राह्मण महासभा उत्तर प्रदेश, आदर्श पत्रकार संघ राष्ट्रीय अध्यक्ष /पूर्वांचल राज्य हिंदी दैनिक अखबार संपादक कृष्ण पंडित!!

मसाने की होली को लेकर उठने लगे तमाम सवाल

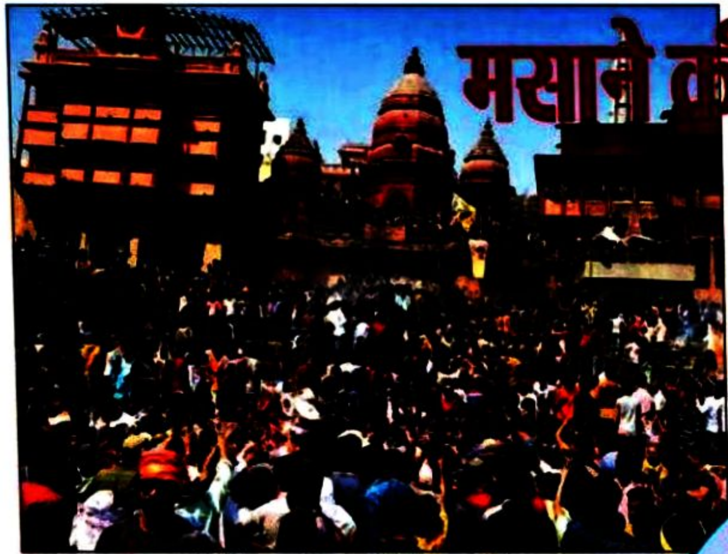

मणिकर्णिकाघाट पर चिता भस्म की होली (फाइल फोटो)

विद्वानों ने माना, यह शास्त्र सम्मत नहीं

कहा इसे लौकिक ही माना जा सकता है

काशी में रंगभरी एकादशी के दूसरे दिन मनायी जाती है चिता भस्म की होली

राधेश्याम कमल

वाराणसी। महाश्मशान मणिकर्णिका को काशी का मोक्ष द्वार माना जाता है। पुराणों के मुताबिक भगवान शंकर से पार्वती सवाल करती हैं कि आपको महाश्मशान इतना प्रिय क्यों है। तब भगवान शिव कहते हैं कि पार्वती मैं सदैव पवित्र स्थान ढूंढने के लिए सारी पृथ्वी पर दिन-रात विचरण करता रहता हूं। लेकिन मुझे श्मशान से बढ़ कर कोई दूसरा पवित्र स्थान नहीं दिखता है। श्मशान में मेरे मन को शांति मिलती है। मसान में आने जाने वालों के मुख से राम नाम सत्य है, सुन कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होती है। जीव के सब जल जाने के उपरांत राख में भी मुझे राम ही दिखते हैं। उसी राम नाम के बल से मैं जीव को जीवन मरण के चक्र से मुक्त कर देता हूं। ऐसी मान्यता है कि काशी में देह त्यागने के बाद मणिकर्णिका घाट पर अन्त्येष्टि के समय कान में भगवान शिव तारक मंत्र देते हैं। भगवती काशी और भगवती मणिकर्णिका शिव को अति प्रिय है। मणिकर्णिकाघाट पर मध्याह्न में भगवान विष्णु समेत न जाने कितने असंख्य देवता वहां स्नान करने के लिए आते हैं। मणिकर्णिका पर सिद्धि प्राप्त करने के लिए सभी तपस्या करते हैं। काशी में रंगभरी एकादशी के दूसरे दिन महाश्मशान मणिकर्णिकाघाट पर चिता भस्म की होली मनायी जाती है। इसे मसाने वाली होली की भी संज्ञा दी जाती है। मसाने वाली होली को लेकर बनारस के प्रसिद्ध शास्त्रीय कलाकार पद्मविभूषण पं. छन्नू लाल मिश्र ने खेले मसाने में होली दिगम्बर, खेले मसाने में होली गाकर इसे और भी प्रसिद्धि दिलायी। लेकिन अब मसाने की होली को लेकर सवाल उठने लगे हैं। यह सवाल कोई और नहीं बल्कि खुद बनारस के विद्वान ही उठा रहे हैं। विद्वानों का मानना है कि मसाने वाली होली शास्त्र सम्मत नहीं है। उनका कहना है कि इसका कोई प्रामाणिक उल्लेख नहीं मिलता है। वहीं दूसरी ओर मसाने की होली आयोजकों का कहना है कि रंगभरी एकादशी के दिन भगवान शंकर महाश्मशान में अपने गणों के साथ होली खेलने आते हैं। इसी को लेकर मसाने की होली खेली जाती है। मसाने वाली होली पर रोक लगाने की मांग को लेकर केन्द्रीय ब्राह्मण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष अजय शर्मा ने प्रधानमंत्री संसदीय कार्यालय में पत्र भी भेजा है। कुछ लोग मसाने की होली को लौकिक मान रहे हैं। उनका कहना है कि यह किसी व्यक्ति के द्वारा शुरू किया गया है। काशी विद्वत महापरिषद के महामंत्री प्रो. रामनारायण द्विवेदी भी मसाने वाली होली को शास्त्र सम्मत नहीं मानते हैं। उधर, मसाने की होली को लेकर पुलिस भी चिंतित है कि कहीं मसाने वाली होली का भी अस्सी वाले कवि सम्मेलन जैसा हश्र न हो जाये।

1999 में मणिकर्णिका घाट पर हुई थी इसकी शुरुआत : गुलशन कपूर

मसाने वाली होली के आयोजक गुलशन कपूर बताते हैं कि मणिकर्णिकाघाट पर रंगभरी एकादशी के दूसरे दिन चिता भस्म की होली खेली जाती है। इसमें भाग लेने के लिए काशी ही नहीं बल्कि दूर दराज से भी लोग शामिल होते हैं। मसाने वाली होली की शुरुआत 1999 में हुई थी। पहले यह आयोजन बाबा मसान के मणिकर्णिका स्थित मंदिर पर हुआ करता था। सभी लोग मंदिर के अंदर परम्परागत से इसका निर्वाह करते थे। बाद में इसको आम जनमानस से जोड़ दिया गया। जब इसकी शुरुआत हुई तो काशीवासी व अन्य लोग भी इससे जुड़ गये। इसके साथ ही महाश्मशान पर इसकी ख्याति बढ़ती गई। इस दिन मध्याह्न में बाबा महाश्मशान का स्नान कराने के बाद उनकी आरती की जाती है। इसके बाद मध्याह्न में ही मसाने वाली होली की शुरुआत हो जाती है। इसे आदि से अनंत की यात्रा का पर्व भी कहते हैं। यहां पर लोगों की बढ़ती हुई भारी भीड़ को देख कर लोगों को यह रास नहीं आ रहा है। ऐसी मान्यता है कि भगवान शिव अपने गणों के साथ महाश्मशान पर चिता भस्म की होली खेलने आते हैं। इसी परम्परा को हम निभा रहे हैं। इस साल भी हम मसाने वाली होली परम्परागत ढंग से मनायेंगे।

पं. छन्नू लाल मिश्र ने 'खेले मसाने में होली दिगम्बर' को काफी चर्चित किया

मसाने वाली होली को लेकर बनारस के प्रसिद्ध शास्त्रीय कलाकार पद्मविभूषण पं. छन्नू लाल मिश्र ने खेले मसाने में होली दिगम्बर, खेले मसाने में होली गाकर इसे काफी चर्चित किया। पं. छन्नू लाल मिश्र के इस गीत को काफी प्रसिद्धि भी मिली। होली का कोई भी कार्यक्रम हो वहां पर पं. छन्नू लाल मिश्र को लोगों की फरमाइश पर इस गाने को सुनाना पड़ता था। बाद में इसी गीत को पद्मश्री प्रसिद्ध लोक गायिका मालिनी अवस्थी ने इसे दूसरे अंदाज में गाया। जो युवाओं के बीच काफी लोकप्रिय भी हुआ। होली के हर कार्यक्रमों में यह गीत लोग सुनना ज्यादा पसंद करते थे। खेले मसाने में होली दिगम्बर गाने वाले पं. छन्नू लाल मिश्र इन दिनों काफी अस्वस्थ चल रहे हैं। वे इन दिनों मिर्जापुर में रह रहे हैं। फोन पर हुई बातचीत में प. पं. छन्नू लाल मिश्र ने कहा कि किसी ने यह गीत हमें लिख कर दिया था और हमने इसे गा दिया। हमें क्या पता कि यह गीत इतना मशहूर हो जायेगा। वैसे महाशिवरात्रि पर बनारस आयेंगे तब बातचीत होगी।

पवित्र मसान भूमि पर होने पर मसाने की होली ठीक नहीं: पं. अजय शर्मा

केन्द्रीय ब्राह्मण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष अजय शर्मा कहते हैं कि काशी के कण-कण तीर्थ की मर्यादा के पालन में भगवान श्रीहरि विष्णु स्वयं से आकर मसान को काशी की सीमा पर छोड़ कर केवल मणिकर्णिका स्नान को आते हैं। शिव काशी के महाश्मशान में मुक्ति प्राप्त करने के लिए भगवान शिव मनुष्यों को राम नाम के बल से सायुज्य मुक्ति प्रदान करते हैं। काशी के महाश्मशान में अन्य श्मशानों की अपेक्षा पंचमहाभूत, तीनों सूक्ष्म शरीर प्रलय में निर्मुक्त होकर पंचतत्व में विलीन हो जाते हैं। इसलिए इसे महाश्मशान कहा जाता है। यह महाश्मशान केवल शरीरी को नहीं वरन् अशरीरी से भी मुक्ति देता है... मरणं मंगलम् मुक्ति। उसी पवित्र मसान भूमि पर विगत कुछ वर्षों से होने पर होली खेले मसाने में कथा कर हुड़दंग करना ठीक नहीं है। यहाँ वेदव्यास ने कहा है कि जो काशी धर्म की जननी है तथा मोक्ष प्रदान करने वाली है। जो काशी पापों का क्षय करने वाली है ऐसी काशी से छेड़ करने वाला अर्थात उसकी मर्यादाओं का हनन करने वाला निश्चय ही अधम होगा।

मणिकर्णिका को उसके स्वरूप में रहने दिया जाय: पं. कामेश्वर उपाध्याय

अखिल भारतीय विद्वत परिषद के महासचिव व प्रख्यात ज्योतिषी पं. डा. कामेश्वर उपाध्याय का कहना है कि मणिकर्णिकाघाट को उसके उसी स्वरूप में बने रहने देना चाहिए। काशी हमारे लिए मोक्ष का धाम है। मोक्षद्वार मणिकर्णिका को होलिका का हुड़दंग घाट होने से बचायें। काशी में विश्वनाथ धाम के बाद सर्वोत्तम स्थान मणिकर्णिकाघाट तीर्थ के रूप में है। पहले यह तीर्थ के रूप में चक्रपुष्करिणी रहा जो बाद में मणिकर्णिका के नाम से ख्यात हुआ। काशी खंड के मुताबिक मणिकर्णिका देवी चार भुजाओं वाली तीन विशाल नेत्रों वाली, दोनों हाथों को जोड़ते हुए पवित्र मुख किया रहती है। इस घाट पर ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ मं मणिकर्णिके नमः ॐ। इस मंत्र का जप करके वहीं गंगा स्नान करने से मोक्ष लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। कोई इस मंत्र का तीन लाख जप कर ले तो भगवती मणिकर्णिका उसे काशी में खींच लाती है। मोक्ष द्वार मणिकर्णिका को हुड़दंग द्वार में बदलने से महापाप ही होगा। वैसे काशी में होली खेलने की परम्परा चौसठ योगिनी मंदिर में दर्शन कर वहीं से प्रारंभ होती है। श्मशान में शिव वहां मरने वालों के कान में तारक मंत्र फूंकते हैं। वहां नाच-गाना हुड़दंग करने से मोक्ष की लालसा के लिए जीव की हत्या होगी। उत्सव का उत्साह धर्म के परम पवित्र मंगलकारी स्वरूप को नष्ट न कर यह काशीवासियों को हमेशा ध्यान में रखना होगा।

मसाने की होली एक लौकिक परम्परा है: पं. कन्हैया त्रिपाठी

गंगा महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री पं. कन्हैया त्रिपाठी का कहना है कि मसाने की होली का कोई शास्त्रीय परम्परा नहीं है। यह किसी व्यक्ति द्वारा लौकिक परम्परा है। वैसे तो कोई कहीं भी होली मना सकता है। अन्य श्मशानों में रात्रि में अन्त्येष्टि नहीं होती है। सिर्फ काशी और वैद्यनाथ दो ही जगहों पर रात्रि में अन्त्येष्टि होती है। जो शास्त्रीय परम्परा है वह समाप्त नहीं होती लेकिन लौकिक परम्परा है वह समाप्त हो जाती है। शास्त्रीय परम्परा में होली, दीपावली, विजयादशमी, कार्तिक पूर्णिमा, सावन आदि है।

Ajay Sharma Add label

Ajay sharma 3/15/2024

to appt.pmo

From	Ajay sharma • ajaysharma5440@gmail.com
To	appt.pmo@gov.in
Date	Mar 15, 2024, 6:09 PM
	View security details

आदरणीय सादर प्रणाम... दिनांक 28 फरवरी 2024 , दिन बुधवार को यह पत्र वाराणसी PMO में भी दिया हूं

सेवा में,
माननीय काशी के प्रिय सांसद जी एवं देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी को उचित कार्यवाही हेतु सादर प्रेषित

विषय - त्रिभुवन विख्यात श्रेष्ठ ब्रह्माण्ड की नाभि, भगवान् विश्वेश्वर, भगवान् विष्णु और अन्य देवी देवताओं का प्रधान स्नान-ध्यान स्थल, पवित्र तीर्थ मणिकर्णिका घाट भूमि और पवित्र महाशमशान जलासेन घाट भूमि के धर्म-शास्त्र-मर्यादा-रक्षार्थ "मसाने की होरी" "होली" जैसी नव प्रचलित दूषित प्रथा को प्रतिबन्धित किए जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,
श्रीमान् श्रीविद्वान् आपको सादर अवगत कराना है कि काशी में अवस्थित त्रिभुवन श्रेष्ठ पवित्र मणिकर्णिका तीर्थ और काशी के पवित्र महाश्मशान-जलासेन घाट पर विगत लगभग 8 वर्ष से शास्त्र-धर्म-तीर्थ-मर्यादा का उल्लंघन कर होली के दिन नव युवकों युवतियों द्वारा शराब-बीयर पीकर नशे में धुत होकर भौंडा, विकृत नाच गान किया जा रहा है। जो सनातन सांस्कृतिक-परम्परा के नितान्त विरुद्ध

PDF DOC-2024 4-WA0208

मसाने की होली : परंपरा या अशुद्ध आयोजन

वाराणसी **(काशीवार्ता)**। काशी में मसाने की होली का आयोजन हमेशा से विवाद का विषय रहा है। जहां कुछ लोग इसे परंपरा और आध्यात्मिकता से जुड़ा आयोजन मानते हैं, वहीं कुछ इसे अशुद्ध और अनैतिक करार देते हैं। इस आयोजन के दौरान श्मशान में चिताभस्म से होली खेली जाती है, जो कई लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र होती है। लेकिन क्या यह आयोजन वास्तव में हमारी संस्कृति और परंपराओं के अनुरूप है?

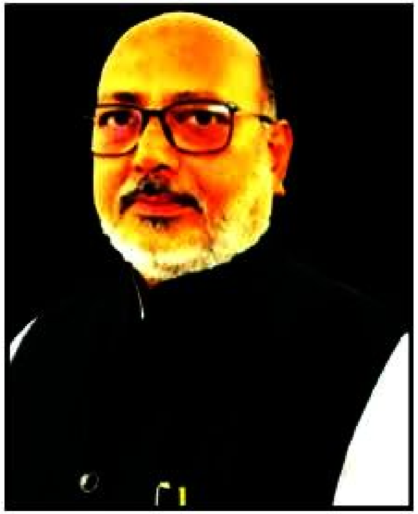

पवित्रता बनाम परंपरा- श्मशान एक पवित्र स्थान है, जहां प्रियजनों को अंतिम विदाई दी जाती है। यह शांति और सम्मान का प्रतीक है, लेकिन मसाने की होली इस पवित्रता को भंग करती है। यह आयोजन मुख्य रूप से अघोरी साधुओं, नागा साधुओं और किन्नरों तक सीमित रहा है, जो अपने आध्यात्मिक साधना के लिए इसे अपनाते हैं। लेकिन गृहस्थ जीवन जीने वालों के लिए इसे अनुचित माना गया है। गृहस्थों को शुद्धता और पवित्रता बनाए रखने की आवश्यकता होती है। उनके लिए मसाने की होली का आयोजन उपयुक्त नहीं है। इस परंपरा को केवल उन्हीं लोगों तक सीमित रखना चाहिए, जो इसे आध्यात्मिक रूप से स्वीकारते हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व वैदिक सनातन न्यास संतोष सिंह ने अपील की है कि हमारी संस्कृति और परंपराओं को बनाए रखने के लिए इस आयोजन की गहराई को समझना जरूरी है।

चिताओं के बीच मसान की होली में जुटी लोगों की भीड़। संवाद

परंपरा

2012 में मणिकर्णिका तीर्थ से हुई थी मसान की होली की शुरुआत

11 लोगों से शुरु हुई मसान की होली में आज पांच लाख की भीड़

आलोक कुमार त्रिपाठी

वाराणसी। 11 लोगों के साथ 2012 में मणिकर्णिका घाट पर शुरू हुई मसान की होली अब वैश्विक स्वरूप ले चुकी है। देश ही नहीं दुनिया भर के सैलानी काशी की इस अद्भुत होली को देखने के लिए ही सिर्फ बनारस आते हैं। बृहस्पतिवार को भी मणिकर्णिका घाट पर पांच लाख से अधिक श्रद्धालुओं, पर्यटकों और विदेशी सैलानियों की मौजूद भीड़ इस बात की गवाह है।

रंगभरी एकादशी के दूसरे दिन आदितीर्थ मणिकर्णिका घाट पर होने वाली चिता भस्म की होली में राग और विराग के दर्शन एक साथ होते हैं। एक तरफ जलती चिताएं तो दूसरी ओर चिता भस्म लपेटे अघोरियों की टोली अबीर और गुलाल उड़ाकर मसान नाथ से आशीष लेती हैं। शहनाई की मंगल ध्वनि, अपनों से बिछड़े हुए लोगों का आर्तनाद और चिताओं के चारों ओर नृत्य करती हुई टोलियों का दृश्य देखकर हर कोई शिवोहम बनने को आतुर नजर आता है।

बाबा मसान नाथ की आरती करते अर्चक। संवाद

मान्यता है कि बाबा विश्वनाथ दोपहर में मध्याह्न स्नान करने मणिकर्णिका तीर्थ पर आते हैं। तत्पश्चात सभी तीर्थ स्नान करके यहां से पुण्य लेकर अपने स्थान जाते हैं और उनके यहां स्नान करने वालों को वह पुण्य बांटते हैं।

महाश्मशान नाथ सेवा समिति के उपाध्यक्ष संजय गुप्ता ने बताया कि 11 लोगों ने मिलकर 2012 में मणिकर्णिका घाट पर मसाने की होली का आयोजन किया था। आज 12 साल में स्थिति ऐसी हो गई है कि पांच लाख से अधिक की भीड़ उमड़ने लगी है और जगह कम पड़ गई है।

व्यवस्थापक गुलशन कपूर ने बताया कि काशी में यह मान्यता है कि रंगभरी एकादशी के दिन बाबा विश्वनाथ माता पार्वती का गौना (विदाई) कराकर अपने धाम काशी लाते हैं।

इसके दूसरे दिन वह अपने गणों के साथ मसान पर होली खेलते हैं। यह पारंपरिक उत्सव मणिकर्णिका घाट पर जलती चिताओं के बीच मनाया जाता है। इस होली को देखकर और खेलकर लोग जीवन के शाश्वत सत्य से परिचित होते हैं।

लगाया जया-विजया और सोमरस का भोग

मसान की होली से पहले मंदिर के व्यवस्थापक गुलशन कपूर ने बाबा महाश्मशान नाथ और माता मसान काली (शिव शक्ति) की मध्याह्न आरती उतारी। बाबा को जया, विजया,मिष्ठान व सोमरस का भोग लगाया गया। इसके बाद बाबा व माता को चिता भस्म व नीला गुलाल चढ़ाया।

|| हर हर महादेव ||

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः

|| हर हर महादेव ||

चिता भस्म की होली

11 मार्च 2025, दोपहर 11:45 बजे

बाबा महाश्मशान नाथ मन्दिर, मर्णिकार्णिका घाट,
काशी (वाराणसी)

नोट :

- देवाधिदेव महादेव ने मजबूरी में विषपान किया था,
  अतः भक्तों से अनुरोध है कि वो किसी भी प्रकार का नशा करके इस आयोजन में शामिल ना हों।
- कृपया माताएँ, बहनें दूर से ही ये होली देखें। भीड़ या मन्दिर में जाने का प्रयास न करें।
- यह एक शुद्ध धार्मिक आयोजन है, कृपया मर्यादा बनाये रखने हेतु ही इस अयोजन में शामिल हों।

गुलशन कपूर
मन्दिर व्यवस्थापक
M.: 9335663617